Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

राजस्थान में महिलाओं की सामाजिक भागीदारी के समक्ष चुनौतियां

सोनम कुमारी गुप्ता [1]

[1] शोधार्थी.

ABSTRACT:

हर देश में भिन्न–भिन्न समाजों की स्थापना हुई है लेकिन राजस्थान का समाज सामंतवादी प्रवृत्ति, राजपूत वंश का प्रभुत्व व पितृसत्ता के गठजोड़ के कारण अन्य राज्यों से भिन्न समाज है। राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रभुत्व की रही है। इस प्रभुत्व ने राजस्थान में बसे समुदाय को एक ऐसा सामाजिक–आर्थिक ढाँचा दिया है जो अन्य राज्यों से भिन्न है। यह ढाँचा कुटुम्ब या कुल आधारित होने के साथ–साथ श्रेणियों में बँटा हुआ भी था। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अनेक स्तरों पर भागीदारी निभाई थी। 1947 में अंग्रेजों की गुलामी से देश मुक्त हुआ।

KEYWORDS:

महिलाएं, आंदोलन, स्वतंत्रता, अधिकार, योजनाएं.

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th April 2024	30th April 2024

विश्लेषण

सत्ता हस्तांरण के साथ–साथ अनेक स्वतंत्रता संग्रामी राजनीति की दुनिया से अलग हटने लगे। कई महिला समूह, जो कई दशक तक भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व करते आए थे, राजनीति का क्षेत्र छोड़कर समाज–सुधार में अधिक समय देने लगे। अतः कुल मिलाकर 1947 के बाद का दो दशक महिला आंदोलन के लिए ठहराव का समय रहा।[1]

स्वतंत्रता के पश्चात् कांग्रेस ने महिलाओं से किए वादों को पूरा करने के लिए अनेक प्रयास किए। इन प्रयासों के तहत् सबसे पहले संविधान में स्त्रियों को समान अधिकार दिए जाने की घोषणा की गई। इसके साथ ही महिलाओं को प्रगति के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उपाय सुझानेवाली अनेक प्रशासकीय इकाइयों का गठन किया गया।[2] राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रयास हो रहे थे उनका प्रभाव राजस्थान में भी हो रहा था। कम से कम महिलाओं की एक दिशा तो तय हो ही रही थी। किन्तु आज़ादी के आंदोलन में महिलाओं में जो ऊर्जा थी वह धीरे–धीरे सिमटती सी गई। आज़ादी के बाद महिलाओं को महत्वपूर्ण सार्वजनिक पदों पर जगह नहीं दी गई। सामाजिक सुधार कार्यक्रमों की गति धीरे–धीरे कम हो गई। राजस्थान के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे तथा सांस्कृतिक परिवेश पर पितृसत्तात्मक विचारधारा का प्रभुत्व था जिसके कारण यह ताकतें राजसत्ता पर हावी हुईं।

30 मार्च 1949 के देशी रियासतों के विलय के बाद राजस्थान राज्य अस्तित्व में आया। इस अवधि में आज़ादी के आंदोलन से जुड़ी अनेक महिलाओं ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में काम किया। महिला मंडलों ने आर्थिक स्वावलम्बन के पक्ष पर ध्यान दिया। अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं का गठन हुआ और उनके द्वारा प्रौढ़ शिक्षा, साक्षरता, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास को लेकर कार्य आरम्भ किया गया। शिक्षित महिलाओं की सरकारी नौकरियों में भागीदारी बढ़ी। लेकिन आज़ादी के समय देखा गया सपना पूरा नहीं होते देख 1970 के दशक के आते–आते महिलाएँ पुनः संगठित होने लगीं।

महिलाओं की स्थिति सुधारने से संबंधित सरकारी नीतियों का मूल्यांकन करने के लिए बनाई गई समिति ने 'महिलाओं की स्थिति पर रिपोर्ट' (1974) में कहा कि समाज और अर्थव्यवस्था में महिलाओं का लगातार निम्न और अधीनस्थ दर्ज़ा सीधे रूप से मुख्य विकास प्रक्रिया का नतीज़ा है। तबसे लेकर अब तक के आँकड़े और उपलब्ध जानकारियों से पता चलता है कि सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और योजनाबद्ध विकास के बावजूद सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में

औरतें पिछड़ी हुई हैं, सम्पत्ति और आर्थिक अधिकारों से वंचित हैं तथा हर स्तर पर लैंगिक भेदभाव, उपेक्षा और हिंसा की शिकार हैं।[3]

इस दशक में यौन हिंसा एवं बलात्कार विरोधी राज्यस्तरीय आंदोलन का जन्म हुआ। कार्यस्थल पर यौन हिंसा के मामलों में तेज़ी से बढ़ोत्तरी हुई। ढाँचागत कार्यक्रम के लागू होते ही सार्वजनिक क्षेत्रों का निजीकरण शुरू हुआ। निजीकरण ने महिलाओं के सामने नया संकट पैदा किया।

राजस्थान में महिलाओं की कमजोर स्थिति का एक बड़ा कारण है राजनीति में महिलाओं की कमज़ोर भागीदारी। जब राज्य में पहली बार 1952 में विधानसभा चुनाव हुए तब एक भी महिला विधायक चुन कर नहीं आई। भारतीय संविधान में महिलाओं को दिए गए समानता के अधिकार और लगभग आधे महिला वोटर होने के बाद भी पिछले 60 सालों में राजस्थान की राजनीति पर पुरुश ही क़ाबिज रहे हैं। वे ही तमाम महत्वपूर्ण निर्णय लेते रहे हैं।

महिला विकास के सरकारी प्रयास

राजस्थान सरकार ने महिला विकास को लेकर समय–समय पर कई कार्यक्रम षुरू किये। इन कार्यक्रमों में ग़रीबी उन्मूलन, रोज़गार व आयवर्धन कार्यक्रम, स्वयं सहायता समूह तथा स्वास्थ्य सम्बंधी कार्यक्रम प्रमुख रहे हैं।

महिलाओं के संदर्भ में राज्य की विकास नीति और चिंतन को मोटे तौर से तीन हिस्सों में बाँट कर देख सकते हैं।

1. 1950–1975 तक राज्य का कल्याणकारी दृष्टिकोण।
2. 1975 से लगभग 1985 तक महिलाओं का विकास में एकीकरण का दृष्टिकोण।
3. 1985 के बाद से महिलाओं के सशक्तीकरण का दृष्टिकोण।

यह वर्गीकरण मोटे तौर पर किया गया है, जो कि इन भिन्न वर्षों में राज्य की नीति के केन्द्र बिंदु की ओर संकेत करता है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि 1975 के वर्षों के बाद से राज्य का कल्याणकारी चरित्र समाप्त हो गया। वास्तव में ये दृष्टिकोण कमोबेश रूप में साथ–साथ चलते रहे हैं।

महिला के विकास को लेकर सरकार की दृष्टि समय–समय पर बदलती रही है। आरम्भ में सोच यह थी कि महिला परिवार की एक सदस्य है। परिवार को दी जाने वाली सहायता से महिलाओं की स्थिति अपने आप बदल जायेगी। लेकिन परिवारों में असमान वितरण व्यवस्था और सरकार की उदासीनता के कारण यह सम्भव नहीं हो सका।

इस प्रारंभिक दौर में 'महिला कल्याण' का नज़रिया अपनाते हुए केन्द्र तथा राज्य सरकार ने ऐसे कार्यक्रम प्रारम्भ किए जिसके द्वारा 'महिला कल्याण' संभव हो। इस क्रम में प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रत्येक ग्राम में दो ग्राम सेविकाओं की नियुक्ति की गई ताकि महिला कल्याण से जुड़े मुद्दों को संबोधित किया जा सके। दूसरी पंचवर्शीय योजना में ग्राम स्तर पर महिलामंडलों के गठन का काम हुआ ताकि कल्याणकारी कार्यक्रमों का बेहतर क्रियान्वयन सुनिष्चित किया जा सके।[4] पर यह प्रयास केवल ऊँची जाति की कुछ ही महिलाओं

को आकर्षित कर सका, अतः अधिक सफल नहीं हो पाया।

नवें दशक में विभिन्न रोजगार व वित्तीय योजनाओं द्वारा भी महिलाओं की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के कई प्रयास किये गए। महिला राजगीर योजना, महिला हैंडपम्प मिस्त्री योजना, महिला समृद्धि योजना, बालिका समृद्धि योजना तथा इन्दिरा महिला योजना।[5] इनके अलावा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना तथा अकाल राहत कार्यों में महिलाओं को रोज़गार उपलब्ध करवाने के विशेष प्रावधान किए गए हैं। 1990 के दशक के अन्त में ही महिलाओं में बचत की अवधारणा तथा आयवर्धन के सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करने के मक़सद से स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम में महिलाएँ

ग्रामीण महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए सामुदायिक विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत सफाई, स्वास्थ्य और जीवन के बेहतर तरीकों को चुना गया। यह भी कहा गया कि महिलाएँ खाली समय में कला और शिल्प सीखकर कुछ कमाने का काम भी कर सकती हैं। महिला कार्यक्रम का उद्देश्य, गाँव की औरत को अच्छी पत्नी, समझदार माँ, एक निपुण गृहिणी और ग्रामीण समुदाय का एक ज़िम्मेदार सदस्य बनाना था।[6] इसके लिए गृह विज्ञान और प्रशिक्षण केन्द्र तथा महिला मंडलों की स्थापना की गई। तीसरी पंचवर्षीय योजना में महिलाओं को पोषाहार शिक्षा देने के लिए पोषाहार कार्यक्रम शुरू कर दिया गया।

कृषि नीति, भूमि–सुधार कार्यक्रम व महिलाएँ

महिलाओं की छवि का जैसा पोशण समाज कल्याण तथा सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में किया जा रहा था उसका असर भूमि सुधार और कृशि सम्बंधी नीतियों में प्रबल रूप से नजर आता है। हालाँकि इन नीतियों के द्वारा बहुत सक्रिय तरीके से औरतों की गृहिणी की भूमिका को आगे नहीं बढ़ाया गया परन्तु उन्हें परिवार के मुखिया के रूप में मान्यता न देकर, ज़मीन पर स्वामित्व के अधिकार न देकर और नई तकनीकी जानकारी तक उनकी पहुँच सीमित करके भी समाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे को मज़बूत किया गया है। लिंग के आधार पर श्रम विभाजन को सुदृढ़ किया गया और विकास की प्रक्रिया में महिलाओं को हाशिए पर डाल दिया गया।

निष्कर्ष

यहां पर इन महिलाओं के जीवन में क्या–क्या बदलाव आए, उन्होंने कौन–कौन सी वर्जनाएँ तोड़ीं तथा इन वर्जनाओं के टूटने के बाद आये बदलावों का इन महिलाओं के जीवन पर क्या असर पड़ा इसको देखा गया तो सामने आया कि योजनाओं को महिलाओं के जीवन पर असर तो पड़ा है। वे सक्षम हुई हैं लेकिन अभी भी बहुत काम करने की जरूरत है।

REFERENCES

1. दीप्ति प्रिया महरोत्रा, भारतीय महिला आंदोलन कल आज और कल, सम्पूर्णा ट्रस्ट, नयी दिल्ली।
2. राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. ममता जैटली / श्री प्रकाश शर्मा, आधी आबादी का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. साधना आर्य, निवेदिता मेनन एवं जिनी लोकनीता, नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, दिल्ली विश्वविधालय, नयी दिल्ली।
5. डॉ. उषा भार्गव, राजस्थान के नारी रत्न, प्रकाशन विभाग, नयी दिल्ली, 2001।
6. डॉ. प्रभा आम्टे, भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 1996।
7. त्रिपाठी कुसुम, जब स्त्रियों ने इतिहास रचा, नवजागरण प्रकाशन, नागपुर, 2004।
8. त्रिपाठी चन्द्रबली, भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, प्रकाशिका, उत्तर प्रदेश, 1967।

OTHER REFERENCES

1. दीप्ति प्रिया महरोत्रा, भारतीय महिला आंदोलन कल आज और कल, सम्पूर्णा ट्रस्ट, नयी दिल्ली, पृष्ठ 52।
2. राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 202।
3. संपादक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन एवं जिनी लोकनीता, नारीवादी राजनीति : संघर्श एवं मुद्दे, दिल्ली विश्वविधालय, नयी दिल्ली, पृष्ठ 201।
4. ममता जैटली / श्री प्रकाश शर्मा, आधी आबादी का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 206।
5. ममता जैटली / श्री प्रकाश षर्मा, आधी आबादी का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ 118।
6. संपादक, साधना आर्य, निवेदिता मेनन एवं जिनी लोकनीता, नारीवादी राजनीतिः संघर्ष एवं मुद्दे, दिल्ली विश्वविधालय, नयी दिल्ली, पृष्ठ 209।